

स्वभावदोष-निर्मूलन हेतु आध्यात्मिक स्तरके प्रयास

स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रिया अर्थात्
मनोलय एवं बुद्धिलय करनेका सुलभ साधन !

卐

भूमिका

卐

'स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रिया' रज-तमसे बने स्वभावदोष दूर करने तथा अन्तर्मुखता बढ़ाने में सहायक होती है। स्वभावदोषोंकी व्याप्तिका विचार करें, तो इन्हें सागरमें तैरनेवाले विशालकाय हिम-खण्डोंकी उपमा देना उचित होगा। जिस प्रकार हिम-खण्डका अधिकांश भाग सागरमें डूबा रहता है, उसी प्रकार स्वभावदोष अन्तःकरणकी गहराईमें बसे होते हैं। इन्हें शीघ्र दूर करनेके लिए स्वभावदोष बढ़ानेमें कारणभूत आध्यात्मिक घटक (जैसे - काम-क्रोधादि षड्रिपु, भय, 'मैं'पन (अहं) आदि) का उच्चाटन आवश्यक होता है। स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रिया अधिक अच्छे ढंगसे करनेमें आध्यात्मिक स्तरपर प्रयास किस प्रकार सहायक होते हैं, इसका विस्तृत विश्लेषण इस ग्रन्थमें किया गया है।

यह ग्रन्थ पढ़कर अध्ययनशील पाठक स्वभावदोष-निर्मूलनकी गति बढ़ाकर सच्चिदानन्दकी अनुभूति ले पाएं, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है।

- संकलनकर्ता

(सनातनकी ग्रन्थमाला 'स्वभावदोष-निर्मूलन'की संयुक्त भूमिका, 'स्वभावदोष (षड्रिपु)-निर्मूलनका महत्त्व एवं गुणसंवर्धन प्रक्रिया' ग्रन्थमें दी है।)

卐

卐

नामजपके विषयमें मार्गदर्शन करनेवाला सनातनका ग्रन्थ !

नामजपका महत्त्व एवं लाभ

विषयसूची

ॐ संकलनकर्ताका परिचय	६
ॐ भूमिका	८
ॐ पाठकोंकी जानकारीके लिए कुछ सामायिक सूत्र	९

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र ‘*’ चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

अध्याय १ : आध्यात्मिक स्तरपर किए जानेवाले प्रयास	१०
१. षड्रिपुओंपर नियन्त्रण रखनेका प्रयास करना	१०
* षड्रिपुओंका स्वभावदोषोंसे सम्बन्ध	१०
* षड्रिपुओंको जीतनेके लिए दैवीगुणोंके संवर्धनका महत्त्व	१३
२. अहं-निर्मूलनके लिए प्रयास करना	१६
* अहं-निर्मूलनका महत्त्व	१६
* अहं-निर्मूलनके लिए किए जानेवाले कुछ प्रयत्न	१८
३. नामजपमें संख्यात्मक एवं गुणात्मक वृद्धि करनेका प्रयत्न करना	२३
* नामजप करनेसे स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रियामें होनेवाले लाभ	२३
४. निरन्तर ‘सत्’में रहना	३४
५. क्षात्रवृत्ति धारण करनेके लिए प्रयत्नशील रहना	३७
* क्षात्रवृत्ति आत्मसात करनेका महत्त्व	३७
६. अध्यात्म तथा विविध ग्रन्थों के सिद्धान्त, तत्त्व एवं नियमों के आचरणका प्रयत्न करना	४६
७. सन्तोंकी सीख आचरणमें लाना	५३
८. भक्तिभावमें वृद्धि करना	५५

अध्याय २ : व्यक्तिके मनकी स्थिति एवं नकारात्मक विचारोंसे लडनेकी क्षमतापर आध्यात्मिक गुणोंका होनेवाला परिणाम	६६
१. मनकी सर्वसामान्य स्थिति	६६
२. क्षात्रवृत्ति जागृत रहे, तब मनकी स्थिति	६७
३. भाव जागृत रहे, तब मनकी स्थिति	६७
४. अहं जागृत न हो, तब मनकी स्थिति	६८
५ संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी	७०

टिप्पणी

आध्यात्मिक स्तर : प्रत्येक व्यक्तिमें सत्त्व, रज और तम, ये त्रिगुण होते हैं। व्यक्ति जब साधना करने लगता है उस समय उसकी देहमें रज-तम गुणोंकी मात्रा घटने लगती है और सत्त्वगुण बढ़ने लगता है। सत्त्वगुण जितना अधिक, आध्यात्मिक स्तर उतना अधिक। कलियुगमें सामान्य व्यक्तिका आध्यात्मिक स्तर २० प्रतिशत होता है। तथा मोक्षप्राप्त व्यक्तिका आध्यात्मिक स्तर १०० प्रतिशत होता है। इस अवस्थामें वह त्रिगुणातीत हो जाता है।

स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रिया हेतु पूरक सनातनका ग्रन्थ !

अहं-निर्मूलनके लिए साधना



- ❖ अहंसे व्यक्तिके जीवनमें हानि कैसे होती है ?
- ❖ गुरुकृपायोगानुसार साधनासे 'अहं-निर्मूलन प्रक्रिया' शीघ्र कैसे होती है ?
- ❖ अहं कम होनेपर व्यक्तिमें आध्यात्मिक उन्नतिके कौनसे लक्षण दिखाई देते हैं ?

❖ अनिष्ट शक्तिकी पीडा-निवारण हेतु 'अहंरहित क्षात्रवृत्ति' आवश्यक क्यों ?

विषयसूची

ॐ संकलनकर्ताका परिचय	६
ॐ भूमिका	८
ॐ पाठकोंकी जानकारीके लिए कुछ सामायिक सूत्र	९

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र ‘*’ चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

अध्याय १ : आध्यात्मिक स्तरपर किए जानेवाले प्रयास	१०
१. षड्रिपुओंपर नियन्त्रण रखनेका प्रयास करना	१०
* षड्रिपुओंका स्वभावदोषोंसे सम्बन्ध	१०
* षड्रिपुओंको जीतनेके लिए दैवीगुणोंके संवर्धनका महत्त्व	१३
२. अहं-निर्मूलनके लिए प्रयास करना	१६
* अहं-निर्मूलनका महत्त्व	१६
* अहं-निर्मूलनके लिए किए जानेवाले कुछ प्रयत्न	१८
३. नामजपमें संख्यात्मक एवं गुणात्मक वृद्धि करनेका प्रयत्न करना	२३
* नामजप करनेसे स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रियामें होनेवाले लाभ	२३
४. निरन्तर ‘सत्’में रहना	३४
५. क्षात्रवृत्ति धारण करनेके लिए प्रयत्नशील रहना	३७
* क्षात्रवृत्ति आत्मसात करनेका महत्त्व	३७
६. अध्यात्म तथा विविध ग्रन्थों के सिद्धान्त, तत्त्व एवं नियमों के आचरणका प्रयत्न करना	४६
७. सन्तोंकी सीख आचरणमें लाना	५३
८. भक्तिभावमें वृद्धि करना	५५